Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

11. भारतीय परिवेश में सामासिक संस्कृति और जनमाध्यमों की भाषिक प्रवृत्ति

डॉ. राजेश सिंह कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर
भारतीय जन संचार संस्थान
पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती
ई-मेलः rajeshkushwahaiimc@gmail.com

शोध सारांश

भारत की सभ्यता और संस्कृति अनुपम एवं अतुल्य है। बहुआयामी संस्कृति और सामाजिक वैविध्यता की ऐसी मिसाल अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। संस्कृति किसी राष्ट्र की नींव की सदृश्य होती है। संस्कृति उन गुणों का समुदाय है जो व्यक्तित्व को परिष्कृत और समृद्ध बनाती है। यदि सभ्यता शरीर है तो संस्कृति उसकी आत्मा है। भारत बहुसंस्कृति के साथ-साथ भाषा वैविध्य का भी देश है जहां कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी कहावत चरितार्थ होती है। भाषा ही संस्कृति, समाज और जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा ही अतीत और वर्तमान के मध्य सेतु का कार्य करती है और भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा ही नर और वानर का विभेद करती है। वैश्वीकरण और संचार क्रांति से जो नई वैश्विक शब्दावली सामने आई है वह समकालीन साहित्य और जनमाध्यमों में भी परिलक्षित है। भाषा एक ऐसा माध्यम है, जहां समाज की वास्तविक संस्कृति प्रतिबिम्बित होती है, अर्थात् सांस्कृतिक साक्षरता में भाषा की विशिष्ट भूमिका होती है।

भारतीय परिवेश में भाषाई पत्रकारिता चाहे प्रिन्ट हो या इलेक्ट्रॉनिक, खुली, उदार और समावेशी चरित्र वाली संस्कृति के साथ विकसित हो रही है। ज्ञान-विज्ञान, तकनीक, संचार, कम्प्यूटर, मनोरंजन, फैशन, फूड, लाइफ-स्टाइल आदि से संबंधित कई नए शब्दों को धीरे-धीरे हिन्दी हो या अन्य भाषा, सबने अपना लिया है। भाषा को आप चाहे संस्कृति का ही अंग माने, चाहे उससे भिन्न, दोनों के घनिष्ठ सम्बंध को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आज भाषाओं की कॉकटेल का दौर है। समकालीन साहित्य, सिनेमा या सोप-ओपेरा को ही लें, हिन्दी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं के समेकन से तैयार मिश्रित भाषा आज सर्वाधिक प्रचलन में है। आमजन में लोकप्रिय होने की वजह से इस मिली-जुली भाषिक प्रवृत्ति को धीरे-धीरे चैनल, अखबार और पत्रिकाएँ भी अपना रही हैं। ऐसी प्रवृत्ति से भाषा में नव्यता प्रस्फुटित होती है, फलतः नित नूतन साहित्य की रचना होती है और भाषा सतत गति से प्रसरित होती है। बहुभाषा-प्रयोग की यह स्थिति हमारी सामासिक संस्कृति एवं भाषागत सहिष्णुता की परिचायक है।

प्रमुख बिन्दुः संस्कृति, सम्प्रेषण, वैश्वीकरण, भाषिक प्रवृत्ति एवं कॉकटेल।

प्रस्तावना

समग्र विश्व में भारत की सभ्यता और संस्कृति अनुपम एवं अतुल्य है। बहुआयामी संस्कृति और सामाजिक वैविध्यता की ऐसी अनूठी मिसाल अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। संस्कृति किसी राष्ट्र का मूलाधार होती है, और संस्कृति

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

को प्रतिबिम्बित करती है भाषा। भाषा के माध्यम से साहित्य बनता है जिसमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि संस्कृतियों को समाहित किया जाता है। वैश्वीकरण और संचार क्रांति से जो नई वैश्विक शब्दावली सामने आई है वह समकालीन साहित्य में भी परिलक्षित है। भाषाई पत्रकारिता चाहे प्रिन्ट हो या इलेक्ट्रॉनिक, खुली, उदार और समावेशी चरित्र वाली संस्कृति के साथ विकसित हो रही है। आमजन में लोकप्रिय होने की वजह से मिश्रित भाषा को धीरे-धीरे चैनल, अखबार और पत्रिकाएँ भी अपना रही हैं। बहुभाषा-प्रयोग की यह स्थिति हमारी सामासिक संस्कृति एवं भाषागत सहिष्णुता की परिचायक है। भाषा की व्यवस्था जातीयता के रंग से मुक्त होती है और स्वयं में भाषा धार्मिक या अधार्मिक नहीं होती। भाषा में नव्यता होती है, फलतः नित नूतन साहित्य की रचना होती है और भाषा प्रसरित होती है। परन्तु ध्यातव्य है कि प्रसार के साथ इसमें कुछ अवांछित तत्व भी शामिल हो रहे हैं जो सांस्कृतिक मूल्यों के विरूद्ध हैं। भारतीय संस्कृति की मूल विशेषता है, समरसता। वैश्वीकृत भारतीय समाज में आज समरसता लुप्त हो रही है, भाषा के प्रयोग में प्रायः दिनोंदिन सांस्कृतिक मूल्यों की गिरावट देखने को मिल रही है।

संस्कृति किसी भी सभ्य समाज की विरासत होती है। यह सामाजिक परम्परा से प्राप्त संस्कार और व्यवहार है। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, रहन-सहन, सोच-विचार, भाषा-व्यवहार, इतिहास, भूगोल, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। मूलतः संस्कृति एक व्यापक गुणों का समुच्चय है जिसमें पूरा समृद्ध परिवेश ही उसकी परिधि में आ जाता है। सभ्यता और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भौतिक उपलब्धि के साथ मानसिक परितृप्ति भी मनुष्य को सदा से काम्य रही है। सभ्यता और संस्कृति का यही मूलमंत्र है। मानव सदा से सभ्य होने के साथ संस्कृति से युक्त होने का प्रयत्न करता आया है। सभ्यता का सम्बंध मनुष्य के भौतिक विकास से है वहीं संस्कृति उसकी आत्मा है। संस्कृति मानव जीवन दर्शन का एक विशेष नियामक तत्व है। संस्कृति में अन्य तत्वों के अलावा भाषा, विचार, विश्वास, रीति-रिवाज, संस्थाएं, उपकरण, तकनीक, कला के कार्य, अनुष्ठान और समारोह शामिल हैं। समाज के भटके हुए लोगों को सांस्कृतिक चेतना ही पग-पग पर सहारा देती है और जीवन की गति के लिए विवेक पैदा करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक एवं बहुजातीय देश में समाज की सहजभाषायी सम्प्रेषण-व्यवस्था में कहीं भी अवरोध की स्थिति नहीं मिलती। यहां एक मातृभाषा के साथ एकाधिक भाषा-रूपों एवं शैलियों का प्रयोग सहज है। मिश्रित या बहुभाषा-प्रयोग की यह स्थिति हमारी सामाजिक संस्कृति, भाषागत सहिष्णुता और इतिहास समर्थित प्रामाणिकता की परिचायक है। वैश्वीकरण को लेकर असंख्य आशाएं या आशंकाएं है लेकिन इसे वंचित रह पाना मुश्किल है। आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा है जो वर्तमान परिवेश में अधिक प्रयोजनपरक है। राजनीतिक गलियारों से, चुनावी-रैलियों, खेल के मैदानों, विद्याकेन्द्रों, टी0वी0 चर्चा, सार्वजनिक स्थलों से होते हुए फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर), ह्वाट्सएप आदि मंचों पर भी जिस भाषा को परोसा जा रहा है, वह क्या है? क्या हम सभ्य समाज के लोग हैं? यह कौन सी संस्कृति है? क्या यही हमारी विरासत है? इन जिज्ञासाओं के समाधान के संदर्भ में अध्ययन के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं:

- भाषा एवं संस्कृति, समाज और जीवन

- सांस्कृतिक सम्प्रेषण में भाषा की भूमिका
- वैश्वीकरण और संचार क्रांति का भाषा पर प्रभाव
- मिश्रित या बहुभाषा-प्रयोग का प्रभाव

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वृहद् स्तर पर विविध प्रकार के साहित्य एवं समाचार सामग्री का पुनरीक्षण किया गया है जिसमें मुद्रित माध्यम, दृश्य-श्रव्य माध्यम के साथ न्यूज पोर्टल भी सम्मिलित हैं। प्रविधि के रूप में अंतर्वस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए समाचार-पत्र, रेडियो, टी0 वी0 चैनल, समकालीन सिनेमा और साहित्य को आधार बनाया गया है।

भाषा एवं सम्प्रेषण

मानव विकास के साथ भाषा ने भी लम्बा सफर तय किया है। माध्यम बदले हैं तो भाषा ने भी अपने तेवर बदले हैं। गांधी की दुनिया से लेकर ग्लोबल दुनिया तक जो कुछ बदला है लगभग उसी तरह के परिवर्तन समस्त भाषाई दुनिया में भी दिखाई पड़ते हैं। आज भाषाई दुनिया की दो स्थितियां सामने हैंः एक पुरातन पंथी और दूसरी नवाचारी। उदाहरण के लिए हिन्दी को ही लीजिए, एक ओर अपने ही बाबुल की परम्पराओं और रूढ़ियों में आबद्ध दीन-हीन, वहीं दूसरे, नवाचारी परिसर में चहक-महक रही है जिसकी कूक और खुशबू से पूरी दुनिया गुंजायमान है। बिंदी लगाकर हिन्दी जब चांदनी के साथ फेसबुक पर उतरती है तो भावनाओं का सागर उमड़ने लगता है। एक्स पर स्वीट हिन्दी के पैर थिरकते हैं तो यूजर्स इसके मोहपाश में बंधे रह जाते हैं। गूगल के साथ ग्लोबल हो चुकी इस नवाचारी हिन्दी में कुछ अंग्रेजी है, कुछ उर्दू, कुछ पंजाबी, कुछ बांग्ला, कुछ भोजपुरी, कुछ मराठी आदि भाषाओं का कॉकटेल है। वक्त के साथ कदमताल करने वाली आज की हिन्दी कम्प्यूटर सैवी जरूर है परन्तु इसमें अपनी माटी की सोंधी सुगंध बरकरार है। ऐसी प्रवृत्ति समस्त भारतीय भाषाओं में प्रकट होती है।

समग्र विश्व में भारत सबसे अलग तरह का देश है, जहां बहुसंस्कृति के साथ-साथ भाषा वैविध्यता भी है। यहां कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी कहावत चरितार्थ होती है। भाषा ही संस्कृति, समाज और जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करती है। भाषा ही अतीत और वर्तमान के मध्य सेतु का कार्य करती है और भविष्य के लिए मार्ग प्रशस्त करती है। भाषा ही नर और वानर का विभेद करती है।

सम्प्रेषण में भाषा की अपनी भूमिका होती है। यहां तक कि दृश्य माध्यमों में भी भाषा के बिना दृश्यों को समझना मुश्किल हो जाता है चाहे मुद्रित माध्यम हो या श्रव्य माध्यम, भाषा के प्रयोग में अत्यधिक सावधानी और कुशलता की जरूरत होती है। ‘‘ भाषा हमारे संप्रेषण का माध्यम ही नहीं, अपितु हमारे भावबोध का साधन भी है। हम भाषा के माध्यम से ही सोचते हैं और भाषा के माध्यम से ही किसी विचार को समझते और समझाते हैं। अतः हमारे स्मृतिकोष और चिंतनप्रक्रिया का आधार मूलतः भाषा ही है। हमारा संपूर्ण चिंतन वस्तुतः भाषा का ही चिंतन है। मानव मन की सृजनात्मक शक्ति की अनुपम देन के रूप में यह भाषा ही बाह्य जगत् और हमारे भावबोध के बीच एक सेतु का काम करती है।‘‘[1]

सामासिक संस्कृतिः

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

सामासिक संस्कृति भारतीय समाज की विरासत है। यह सामाजिक परम्परा से प्राप्त संस्कार और व्यवहार है। मानव संस्कृति का विकास भी सामाजिक व सामूहिक रूप में ही होता है। समाज से पृथक रह कर मनुष्य न भौतिक क्षेत्र में उन्नति कर सकता है और न ही सांस्कृतिक क्षेत्र में। इसीलिए संस्कृति किसी एक व्यक्ति के प्रयत्न का परिणाम नहीं होती। वह समाज के. अनगिनत व्यक्तियों के सामूहिक प्रयत्न का परिणाम होती है और यह प्रयत्न भी ऐसा जिसे एक के बाद एक आने वाली मनुष्यों की विविध संततियां निरन्तर करती रहती हैं। यही कारण है कि संस्कृति का विकास धीरे-धीरे होता है। वह किसी एक युग की कृति नहीं होती, अपितु विभिन्न युगों के विविध मनुष्यों के सामूहिक व अनवरत श्रम का परिणाम होती है। ''भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है जो लगभग पाँच हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी है। देश की अलग अलग और विशिष्ट शैलियों से युक्त संस्कृतियों का मिला-जुला स्वरूप होने के कारण इसे एक सामासिक संस्कृति का नाम दिया गया है। इसलिए अनेकता में एकता ही हमारी संस्कृति की सबसे बड़ी पहचान है। यहाँ विभिन्न धर्मो के लोग अपनी धार्मिक परंपराओं और आस्थाओं के साथ सामंजस्य पूर्ण ढंग से रहते हैं। यहाँ जाति, धर्म, भाषा, समुदाय और लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। इस देश का संविधान यहाँ की सभी संस्कृतियों को समान रूप से फलने-फूलने का अवसर प्रदान करता है। भारत भूमि ऋषि-मुनियों, मनीषियों, महान साहित्यकारों और देशभक्तों की भूमि है जिन्होंने इस देश को एक नई दिशा प्रदान की है और जीवन की शाश्वत् सच्चाई के बारे में लोगों को अवगत कराया है।''[2]

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, रहन-सहन, सोच-विचार, भाषा-व्यवहार, इतिहास, भूगोल, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। मूलतः संस्कृति एक व्यापक गुणों का समुच्चय है जिसमें पूरा समृद्ध परिवेश ही उसकी परिधि में आ जाता है। सभ्यता और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भौतिक उपलब्धि के साथ मानसिक परितृप्ति भी मनुष्य को सदा से काम्य रही है। सभ्यता और संस्कृति का यही मूलमंत्र है। मानव सदा से सभ्य होने के साथ संस्कृति स युक्त होने का प्रयत्न करता आया है। सभ्यता का सम्बंध मनुष्य के भौतिक विकास से है वहीं संस्कृति उसकी आत्मा है। संस्कृति मानव जीवन दर्शन का एक विशेष नियामक तत्व है। समाज के भटके हुए लोगों को सांस्कृतिक चेतना ही पग-पग पर सहारा देती है और जीवन की गति के लिए विवेक पैदा करती है। ''भाषा समस्त साहित्य एवं संस्कृति की पहचान है, इसी से किसी भी समाज या राष्ट्र की सभ्यता, संस्कृति और समृद्धि प्रमाणित होती है। भाषा अपनी व्यावहारिक क्षमता के द्वारा व्यावसायिक, व्यापारिक आदि मानव गतिविधियों का आधार बन समृद्धि, प्रगति और उन्नति का पर्याय भी बन जाती है।''[3] भाषा सांस्कृतिक सम्प्रेषण के साथ-साथ परिवर्तित और परिमार्जित होती है। जनमाध्यमों की वजह से भाषा का प्रसार क्षेत्र सारे भारत में है। इसे वे लोग भी सुनते हैं और बोलते हैं जिनकी वह मातृभाषा नहीं हैं।

सामासिक संस्कृति और जनमाध्यमों की भाषिक प्रवृत्ति का विश्लेषणः

भाषा विकासशील होती है और उसका स्वभाव समावेशी होता है इसलिए यह अपने संसर्ग में आने वाली दूसरी भाषाओं से बहुत कुछ ग्रहण करती है। इस परिप्रेक्ष्य में हिन्दी का उदाहरण सबके सामने है। ''वैश्वीकरण और संचार क्रांति से जो नई वैश्विक शब्दावली सामने आई है, उसके लिए भी हिन्दी ने अपने दरवाजे पूरी तरह से खोल दिए हैं। विज्ञान, तकनीक, संचार, कम्प्यूटर, मनोरंजन, फैशन, फूड, लाइफ-स्टाइल आदि से संबंधित कई नए शब्दों

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

को धीरे-धीरे हिन्दी ने अपना लिया है। भाषा को आप चाहे संस्कृति का ही अंग मानें चाहे उससे भिन्न, दोनों के घनिष्ठ सम्बंध को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। वाक्य-रचना की पद्धति हमारी चिंतन-पद्धति पर निर्भर होती है। आप अपनी भाषा में कर्म को क्रिया से पहले बिठाते हैं या बाद में, यह आपकी परंपरागत जातीय चिंतन-प्रक्रिया पर निर्भर है। आप अपनी भाषा किस तरह के विदेशी शब्द, कितने परिमाण में ग्रहण करते हैं, यह आपके जातीय चरित्र पर निर्भर है।”[4]

भारतीय शहरी मध्य वर्ग को लगता है कि अंग्रेजी उसकी वर्गीय उर्ध्व गतिशीलता को प्रश्रय देती है। इस वर्ग में अपनी पहुंच और प्रभाव का दायरा बढ़ाकर विज्ञापनों की आय में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए भाषायी मीडिया ने नगर आधारित न्यूज बुलेटिन शुरू किए हैं और नीति के तहत इनकी भाषा अंग्रेजी मिश्रित रखी गई है। हिन्दी चैनलों को ही लीजिए, यहां हिन्दी और अंग्रेजी के मिश्रण से तैयार भाषा ‘हिंग्लिश’आज सर्वाधिक प्रचलन में है। आम लोगों में लोकप्रिय होने की वजह से इस हिंग्लिश को धीरे-धीरे चैनल, अखबार और पत्रिकाएं भी अपना रही हैं। हिंग्लिश की शुरुआत केबल सैटेलाइट टेलीविजन के विस्फोटक प्रसार वाले दौर में जी टी वी पर हुई और फिर यह स्टार टीवी, सोनी टीवी से होते हुई कमोबेश सभी चैनलों पर फैल गई। आरंभ में इन चैनलों की पहुंच का दायरा मुख्यतः शहरी उच्च और मध्य वर्ग तक सीमित था। जिसको अंग्रेजी मिश्रित भारतीय भाषाएं अच्छी लगती थी इस लिए इन चैनलों की टीआरपी और विज्ञापनों से होने वाली आय का ग्राफ तेजी से उंचा चढ़ता गया। इन चैनलों का आग्रह आम लोगों को समझ में आने योग्य आम बातचीत में प्रयोग होने वाली भाषा पर था, इसलिए इन चैनलों ने मिलीजुली भाषाओं के प्रयोग को व्यवहार में अपना लिया। अधिसंख्य इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के चैनल इस पथ का अनुसरण कर रहे हैं।

सोशल मीडिया एक तरह से दुनिया के विभिन्न कोनों में बैठे लोगों का आपसी संवाद है जिनके पास इंटरनेट की सुविधा है। यह एक ऐसी सुविधा है, जिसके जरिए वे न सिर्फ अपनी बातों को दुनिया के सामने रखते हैं, बल्कि वे दूसरों की बातों सहित दुनिया की तमाम घटनाओं से अवगत भी होते हैं। सोशल मीडिया की प्रमुख खासियत जन-सहभागिता और त्वरित फीडबैक है जिससे यूजर सीधे जन-संवाद करता है। आज सोशल मीडिया सामान्य संपर्क, संवाद या मनोरंजन के अतिरिक्त नौकरी आदि ढूंढ़ने, उत्पादों या लेखन के प्रचार-प्रसार में भी कारगर है। यही कारण है कि न सिर्फ नेता बल्कि अब तो अभिनेता भी अपनी खुद की जानकारी, अपनी फिल्मों की जानकारी भी सोशल मीडिया के माध्यम से देने लगे हैं। एक ओर जब मुख्यधारा की मीडिया की विश्वसनीयता हर रोज कटघरे में खड़ी होती है, तो ऐसी परिस्थिति में सोशल मीडिया आम जनमानस के लिए संवाद के नए विकल्प के तौर पर उभरा है। वर्तमान में सोशल मीडिया मुख्यधारा की मीडिया के लिए एफआईआर का काम करती है, आज फेसबुक के पोस्ट, स्टेट्स और ट्विटर की ट्वीट से न्यूज-ब्रेक होने लगी है और बड़ी खबर बनने लगी हैं। सोशल मीडिया की भाषा भी भाषाओं का कॉकटेल है।

‘‘भाषा मानव जीवन की सबसे अमूल्य सम्पत्ति है क्योंकि इसका सीधा सम्बंध जीवन से है इसका प्रयोग इतना यांत्रिक एवं सहज है हमें पता ही नहीं चलता। वस्तुतः भाषा हमारी संस्कृति की परिचायक भी है।’’[5] साथ ही साधन रूप होने से भाषा पर ज्ञान के अन्य क्षेत्रों जैसे साहित्य, मनोविज्ञान, दर्शन, धर्म आदि का व्यावसायिक दबाव

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रहता है। संस्कृति के संवहन का दायित्व भी भाषा पर होता है। भाषा को सम्प्रेषण का महत्वपूर्ण कारक और भावबोध का अन्यतम साधन माना गया है।

हिन्दी फिल्म जगत में असरदार अभिनय के लिए मशहूर आशुतोष राणा संतुलित भाषा बोलने के लिए भी जाने जाते हैं। राणा कहते हैं कि ‘‘ वह भाषा समृद्ध नहीं हो सकती जो अन्य भाषा के शब्दों को आत्मसात करने का साहस नहीं रखती। यह गंगाजमुनी संस्कृति ही इसे इतना मोहक व इतना दिलकश बनाती है।’’[6]

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के रजत जयंती वर्ष में आयोजित वार्षिकोत्सव में अपने अध्यक्षीय भाषण में भूतपूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हाराव ने उद्धृत किया थाः ’’हिन्दी भाषा के विकास का सबसे बड़ा दायित्व हिन्दीभाषी लोगों के कंधों पर है। यदि अन्य भाषा के गुणों और शब्दों को ग्रहण करले तो कोई कारण नहीं दिखता कि यह अन्य राज्यों के लोगों के लिए स्वीकार्य नहीं हो।’’[7] कहीं न कहीं राव का संकेत बहुभाषिक संस्कृति की ओर था।

भारत में वैश्वीकरण के आगमन के साथ जनमाध्यमों का भी कलेवर बदला है। भाषाई मीडिया की संस्कृति में आमूल-चूल परिवर्तन देखने को मिला है। वैश्वीकरण के दौर में ही जनमाध्यमों ने चोला ही नहीं बदला अपितु विदेशी जमीन पर भी अपनी पहुंच बनाई है। वैश्वीकरण से जहां भाषाई जनमाध्यमों की कमाई और पहुंच बढ़ रही है वहीं भाषा का प्रसार भी तेजी से हो रहा है।

आधुनिक युग में बाजार का महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन की प्रत्येक जरूरत को बाजार पूरित करता है। आज के बाजार की शक्ति ऐसी है कि दुनिया के कोने-कोने की हर वस्तु यथा फल-फूल, खान-पान, वस्त्र, साहित्य आदि एक ही बाजार में उपलब्ध है। दिन-प्रतिदिन के अतिरिक्त वस्तुएं संस्कृति की भी हैं और कला की भी। कहने का तात्पर्य है कि दुनिया एक शॉपिंग मॉल है। वस्तुतः आज की दुनिया में अन्योन्याश्रिता बढ़ गई है। युगीन परिवर्तन यह कि पहली बार स्थानीय और वैश्विक दो पृथक-पृथक धाराएं समेकित हुई हैं। इस प्रकिया की प्रमुख वजह संचार साधनों में वृद्धि एवं सूचना तकनीक की नवीनतम प्रौद्योगिकी है। ‘‘कार्ल मार्क्स का कथन हैः कामगारों का कोई देश नहीं होता।’’[8] संभवतः मार्क्स का संकेत वैश्विक अर्थव्यवस्था की तरफ ही था!

आधुनिकीकरण ने दुनिया भर की संस्कृतियों को मिश्रित करने का प्रयास किया है। व्यवसाय, तकनीक और संस्कृति का समेकित संचार ही वैश्वीकरण है। वैश्विक और स्थानीय संस्कृति की अन्तःक्रिया को कभी भी अवरूद्ध नहीं किया जा सकता। वैश्वीकरण कभी भी स्थानीयता से दूर नहीं करता है। यह सही है कि आज की दुनिया एक मीडिया की दुनिया है लेकिन इस दुनिया में कभी भी स्थानीयता को पृथक नहीं किया जाता है। इसी वजह से मीडिया में निकटता को प्रमुखता दी जाती है। केविन रॉबिन्स का स्पष्ट मत है कि ‘‘स्थान और संस्कृति की जो जमीनी हकीकत है उसकी हम कभी भी उपेक्षा नहीं कर सकते। वैश्वीकरण का सम्बंध वस्तुतः पुनः स्थानीयकरण से है। वैश्विक और स्थानीयता के सम्बंधों से जो नई चीज उभरती है वह स्थानीयता को बहुलवादी बनाती है।’’[9]

वैश्वीकरण अथवा भूमंडलीकरण के दो पक्ष हैं एक आर्थिक और दूसरा सांस्कृतिक। आर्थिक दृष्टि से वैश्वीकरण का अर्थ है राष्ट्र-राज्य की सीमाओं का अतिक्रमण कर पूंजी का दुनिया भर में मुक्त-प्रवाह बनाना और पूंजी की मौद्रिक तरलता को बढ़ाना व बाजार की शक्तियों को महत्व देना। दूसरी तरफ सांस्कृतिक दृष्टि से वैश्वीकरण

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

का अभिप्राय है कि देश विशेष की संस्कृति को पूरी दुनिया में प्रसारित कर देना। कुमार विमल का मानना है कि ''वैश्वीकरण का लाभ दुनिया के जिन भूखंडों का होगा उन्हीं की संस्कृति विश्व में फैलेगी।''[10]

अंग्रेजी मिश्रित भाषा के प्रयोग द्वारा क्या इसकी कोई वैश्विक पहचान बन सकती है? अंग्रेजी विहीन या विशुद्ध भाषा में रचित समाचार की सामग्री का इस वक्त कोई भविष्य है या नहीं? सूचना क्रांति और वैश्वीकरण के साथ-साथ क्या भारतीय भाषाओं और लोक संस्कृतियों की समानान्तर विकास स्थिति संभव बनाई जा सकती है? प्रश्न थोड़ा उलझे हुए हैं परन्तु भारतीय संस्कृति में खासकर लोक-संस्कृति का आत्मबल कहीं बहुत प्रबल है और भारतीय संस्कृति का प्रतिबिम्ब भाषाई मीडिया जिसने अंग्रेजी मीडिया को जो पीछे छोड़ा है वह एक मील का पत्थर है।

भाषा की भावना सर्वे भवन्तु सुखिनः... पर केन्द्रित होगी तभी समरसता की विरासत का सम्प्रेषण होगा। "संस्कृतियों के आदान-प्रदान और वैचारिक मंथन से वसुधैव कुटुंबकम् का हमारा स्वप्न साकार हो सकता है और वैश्वीकरण केवल भौतिक वैश्वीकरण न होकर आध्यात्मिक होगा।"[11] उपर्युक्त विचारों को दृष्टिगत रखते हुए यह प्रतीत होता है कि भारतीय भाषाएं वैश्वीकरण के कारण जरूर थोड़ी परिवर्तित हुई है परंतु इसके प्रचार-प्रसार में वैश्वीकरण ने ही जादुई गुणक का कार्य किया है।

विजुअल मीडिया में हम दृश्यों से बहुत सारी बातें समझ जाते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद यह स्वीकार करना पड़ेगा कि सफल संदेश सम्प्रेषण में भाषा का प्रतिस्थानापन्न कोई नहीं है। "भारत जैसे बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक एवं बहुजातीय देश में समाज की सहजभाषायी सम्प्रेषण-व्यवस्था में कहीं भी अवरोध की स्थिति नहीं मिलती। यहां एक मातृभाषा के साथ एकाधिक भाषा-रूपों एवं शैलियों का प्रयोग सहज है। बहुभाषा-प्रयोग की यह स्थिति हमारी सामाजिक संस्कृति, भाषागत सहिष्णुता और इतिहास समर्थित प्रामाणिकता की परिचायक है।"[12]

हिन्दी में अंग्रेजी भाषा के शब्दों के आयात के पर टिप्पणी करते हुए आजतक के वहीद नकवी का कहना है कि "कोई भाषा जिन्दा नहीं रह सकती अगर वो दूसरी भाषाओं से शब्द नहीं लेती। लेकिन शब्दों को लेने में सावधानी होनी चाहिए और ऐसे लीजिए कि आपकी भाषा का तेवर न बिगड़े, भाषा जो है उसका गौरव बना रहना चाहिए।"[13] भाषा की कॉकटेल परोसने के पीछे प्रमुख वजह यह भी है कि मीडिया एक ऐसी विधा है जो क्लॉस के लिए न होकर मॉस के लिए होती है। पाठको/श्रोताओ/दर्शकों की रेंज भी विविधतापूर्ण है; चाहे वह ग्रामीण या नगरीय हो या उच्च वेतनभोगी या अल्प, भारतीय या विदेशी आदि। "नेल्सन मंडेला कहते हैं कि यदि आप किसी से ऐसी भाषा में बात करें, जो वह समझ सकता है तो वह उसके मस्तिष्क में जाती है। लेकिन यदि आप उसकी अपनी भाषा में बात करते हैं, तो वह सीधे उसके हृदय को छूती है।"[14]

परिवेश एवं भाषा व्यवहार को लेकर असंख्य आशाएं या आशंकाएं है लेकिन इसे वंचित रह पाना मुश्किल है। इस संदर्भ में डॉ अर्जुन चव्हाण का कहना है कि "आज वह भाषा सबसे समृद्ध भाषा नहीं है जिसका इतिहास, साहित्य और संस्कृति समृद्ध है बल्कि वह भाषा सबसे समृद्ध है जो वर्तमान परिवेश में अधिक अनुकूल और उपयोग में लाई जाती है।"[15] बहुभाषा-प्रयोग की स्थिति हमारी सामासिक संस्कृति एवं भाषागत सहिष्णुता की परिचायक है। सूचना-प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण के दौर में भाषा सम्प्रेषण को ज्यादा महत्व दिया है जिसके कारण संचार व्यवस्था में

क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। भाषा की समस्या को सुलझाने के लिए कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। लेकिन यह भी ध्रुव सत्य है कि वैश्वीकरण और संचार युग में व्यक्तियों, समूहों, समाजों और राष्ट्रों का भविष्य अधिकतर एक दूसरे के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने की उनकी क्षमता पर निर्भर करता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए वृहद् स्तर पर विविध प्रकार के हिन्दी के समाचार-पत्र, रेडियो, टी0 वी0 चैनल, समकालीन सिनेमा और साहित्य का पुनरीक्षण एवं विश्लेषण के उपरांत प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैंः

- भाषा ही संस्कृति, समाज और जीवन को अभिव्यक्ति प्रदान करती है।
- सांस्कृतिक सम्प्रेषण में भाषा की विशिष्ट भूमिका होती है।
- वैश्वीकरण और संचार क्रांति से भाषा विकसित एवं प्रसरित हुई है।
- मिश्रित या बहुभाषा-प्रयोग सामासिक संस्कृति एवं भाषागत सहिष्णुता की परिचायक है।

स्पष्ट है कि भारतीय परिवेश में जनमाध्यमों की बहुभाषिक प्रवृत्ति से सांस्कृतिक साक्षरता का प्रसार हुआ है जिससे स्पष्ट तौर पर सामासिक संस्कृति के संरक्षण को प्रश्रय मिलता है। लेकिन भविष्य के लिए सुझाव है कि समस्त भारतीय भाषाओं की उन्नति के लिए मौलिक कृतियों को भी प्रोत्साहन दिया जाए जिससे भाषाओं द्वारा संवहित संस्कृति का यथार्थ रूप में सम्प्रेषण हो सके। सामासिक संस्कृति में भाषा के योगदान को देखते हुए भारतीय भाषाओं के मध्य साहित्य के भाषांतरण एवं अनुवाद को गतिशीलता प्रदान करनी होगी। प्रस्तुतियों एवं रचनाओं में उच्च-संस्कृति, शिष्ट-संस्कृति, कुलीन-संस्कृति, भद्र-संस्कृति, ग्राम-संस्कृति एवं लोक-संस्कृति को भी प्रर्याप्त स्थान मिलना चाहिए जिससे समग्र भारत का दर्शन हो सके।

संदर्भ स्रोत

1. https://ctb.rajbhasha.gov.in/pdf/chapter7.pdf, पृ0 05।
2. https://www.indiaculture.gov.in/sites/default/files/sanskriti/Sanskriti_2021.pdf, पृ010
3. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा साहित्य और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद, पृ0 01।
4. शर्मा, रामविलासः संस्कृति और भाषा, राजभाषा हिन्दी, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ0 46।
5. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा साहित्य और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद, पृ0 13।
6. दैनिक हिन्दुस्तान लखनऊ संस्करण, विमर्श, दिनांक 22-07-2007
7. राष्ट्रभाषा हिन्दी: समस्याएं और समाधान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना।
8. दोषी एस0एल0: आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0-328।

The Asian Thinker

Year-5 Volume: IV, October-December, 2023 Issue-20 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

9. दोषी एस0एल0: आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0-328।
10. विमल, कुमार: साहित्य समाज का अल्ट्रासाउंड है, आजकल, जनवरी 2012।
11. वर्मा, सत्येंद्रः हिन्दी व्याकरण और व्यवहार, एनसीआरटी, दिल्ली, पृ0 170।
12. वर्मा, विमलेश कांति व मालतीः भाषा साहित्य और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान प्रकाशन, हैदराबाद, पृ032।
13. पचौरी, सुधीश एवं शर्मा, अचलाः नए जन-संचार माध्यम और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
14. https://www.drishtiias.com/hindi/blog/relevance-of-mother-tongue-in-the-era-of-globalization
15. चव्हाण, डॉ० अर्जुनः मीडिया कालीन हिन्दी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 37।

The Asian Thinker